देवी लक्ष्मी का परिचय और विशेष धन योग

डॉ. सुशील अग्रवाल

हिन्दू धर्म के अनुसार, धन–समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी को ही माना गया है। दीवाली पर देवी लक्ष्मी को विशेष रूप से प्रसन्न करने के लिए उनकी उपासना की जाती है। इस लेख में देवी लक्ष्मी के परिचय के साथ–साथ ज्योतिषीय दृष्टिकोण से विशेष धन योगों का वर्णन है।

लक्ष्मी जी की उत्पत्ति

हिन्दू धर्म में देवी लक्ष्मी को विशिष्ट स्थान प्राप्त है क्योंकि वे भगवान विष्णु की भार्या हैं। जब देवता और असुर क्षीर सागर या समुद्र मंथन कर रहे थे, तब देवी लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी। श्रीमद्भागवतम् के स्कन्ध–8, अध्याय–8, श्लोक 8 में देवी लक्ष्मी की उत्पत्ति का निम्न वर्णन मिलता है :

ततश्चाविरभूत्साक्षाच्छ्री रमा भवत्परा।
रजयन्ती दिशाः कान्त्या विद्युत्सौदामनी यथा।। 8 ।।

तब श्री (धन, समृद्धि, सम्मान आदि) की देवी रमा (लक्ष्मी, कमला आदि अनेक नाम हैं) प्रकट हुईं, जो भगवान को ही समर्पित रहती हैं। उनकी कान्ति संगमरमर के पर्वत को प्रकाशित करने वाली बिजली की चमक को भी धूमिल कर रही थी।

अगले श्लोकों में वर्णन है कि उनके सौन्दर्य, रूप–रंग और महिमा से सब उनकी ओर आकर्षित हो गए। इन्द्र उनके लिए आसन लाए और नदियों ने उनके अभिषेक के लिए सोने के घड़ों में पवित्र जल लाकर दिया। गन्धर्वों ने संगीत की तान छेड़ दी और नर्तकियाँ नाचने–गाने लगीं। भगवती देवी लक्ष्मी हाथ में कमल लेकर सिंहासन पर बैठ गईं। ।

देवी लक्ष्मी सोचने लगीं कि मुझे कोई निर्दोष और सभी उत्तम गुणों से सदैव युक्त रहने वाला अविनाशी पुरुष मिले तो मैं उसे वरण करूँ। सब ओर देखने पर उन्हें वैसा कोई पुरुष नहीं दिखाई दिया। हर एक में गुण थे तो अवगुण भी थे। वे *सोचने लगीं कि केवल एक* भगवान विष्णु ही हैं जो अवगुण रहित हैं और जिनमें सभी शुभ गुण नित्य रहते हैं, परन्तु वे मुझे चाहते ही नहीं हैं। इस प्रकार सोच–विचारकर श्रीलक्ष्मी जी ने अपने विष्णु भगवान को ही वर के रूप में चुन लिया। लक्ष्मी जी ने भगवान विष्णु के गले में वह कमलों की सुन्दर माला पहना दी। भगवान विष्णु ने श्रीलक्ष्मी जी को अपने वक्षस्थल पर ही हमेशा रहने का निवास स्थान दिया। लक्ष्मी जी ने वहीं से तीनों लोकों की प्रजा की अभिवृद्धि की। देवता आदि लक्ष्मी जी की कृपा

दृष्टि से उत्तम गुणों से सम्पन्न होकर बहुत सुखी हो गये। जब लक्ष्मी जी ने दैत्य और दानवों की उपेक्षा कर दी, तब वे लोग निर्बल, आलसी, निर्लज्ज और लोभी हो गए।

लक्ष्मी जी की पूजा दिवाली में क्यों?

जिस रात श्रीलक्ष्मी देवी प्रकट हुई थीं, वह कार्तिक मास की अमावस्या थी। इसी रात भगवान राम भी सीता, लक्ष्मण, हनुमान आदि सहित अयोध्या वापिस लौटे थे। इसीलिए दिवाली में लक्ष्मी जी की पूजा करके उनका जन्मदिवस मनाया जाता है, राम–सीता–हनुमान जी की पूजा करके उनका स्वागत किया जाता है और गणेश जी की पूजा करके विघ्नों का नाश करके शुभता और मंगल की कामना की जाती है।

लक्ष्मी जी की स्थिरता कैसे रहे?

भगवत गीता के अध्याय 18 के श्लोक 78 में बताया है, मनुष्य के पास धन, समृद्धि और सम्मान किस प्रकार स्थिरता से रह सकता है :

यत्र योगश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रोविजयो भूतिर्ध्रवा नीतिर्मतिर्मम ।। 78 ।।

जहाँ भगवान हैं (धर्म है) तथा धनुर्धर अर्जुन (भगवान को कर्ता मानकर कार्य करने वाला कर्मशील व्यक्ति) है, वहीं श्री (लक्ष्मी जी), विजय, ऐश्वर्य वृद्धि और न्याय है, यही भगवान का भी निश्चित मत है।

ज्योतिषीय सामान्य धन योग

इस लेख को धन योगों तक ही सीमित रखा गया है। राजयोगों और पंच महापुरुष योगों आदि का वर्णन नहीं किया जा रहा है।

निम्न भाव/भावेशों के परस्पर सम्बन्धों से सामान्य धन योग निर्मित होते हैं :

- लग्नेश और द्वितीयेश
- लग्नेश और पंचमेश
- लग्नेश और नवमेश
- लग्नेश और एकादशेश
- द्वितीयेश और पंचमेश
- द्वितीयेश और नवमेश
- द्वितीयेश और एकादशेश
- पंचमेश और नवमेश
- पंचमेश और एकादशेश
- नवमेश और एकादशेश
- चन्द्र और मंगल की युति (किसी भी भाव में)
- II और XI भावों में शुभ ग्रह स्थित हों अथवा II और XI के स्वामी दो या दो से ज्यादा ग्रहों से संबंध बनाते हों
- अर्थ त्रिकोण (II, VI, XI) के स्वामी कुंडली के शुभ भावों के स्वामियों के साथ संबंध बनाते हों।

विशेष धन योग

बृहत पाराशर होरा शास्त्र में पराशर जी ने कहा है कि निम्न सात योगों में जातक अवश्य ही धनवान होता है :

1) सूर्य लग्न में सिंह राशि में हो मंगल और गुरु से युत/दृष्ट हो।
2) चन्द्र लग्न में कर्क राशि में हो बुध या गुरु से युत/दृष्ट हो।
3) मंगल लग्न में मेष या वृश्चिक राशि में हो बुध, शुक्र और शनि से युत/दृष्ट हो।
4) बुध लग्न में मिथुन या कन्या राशि में हो शनि और गुरु से युत/दृष्ट हो।
5) गुरु लग्न में धनु या मीन राशि में हो बुध और मंगल से युत/दृष्ट हो।
6) शुक्र लग्न में वृषभ या तुला राशि में हो शनि और बुध से युत/दृष्ट हो।
7) शनि लग्न में कुम्भ या मकर राशि में हो मंगल या गुरु से युत/दृष्ट हो।

निम्न योगों में जन्मा जातक महा धनवान होता है

1) यदि पंचम भाव में शुक्र स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में मंगल स्वराशिस्थ हो।
2) पंचम में मंगल स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में शुक्र हो।
3) यदि पंचम में बुध स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में चन्द्र, मंगल, गुरु हों।
4) यदि पंचम में गुरु स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में बुध हो।
5) यदि पंचम में सूर्य स्वराशिस्थ हो और एकादश में शनि, चन्द्र और गुरु हों।
6) पंचम में चन्द्र स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में शनि हो।
7) पंचम में शनि स्वराशिस्थ हो और एकादश भाव में चन्द्र और सूर्य हों।

पंचमेश एवं नवमेश दोनों विशेष धनप्रद होते हैं। इन दोनों से युक्त ग्रह अपनी दशा में धनप्रद होते हैं। इन योगों में ग्रहों की क्रूरता और सौम्यता के अनुसार सुमार्ग या कुमार्ग से धन का लाभ, एवं बल के अनुसार अल्प या अधिक धन समझना चाहिए। ❐

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371